भारत में पूर्ण दवा-प्रतिरोधी टीबी का प्रकोप

टीबी का घातक प्रकार कुप्रबंधन को उजागर करता है। भारतीय चिकित्सकों ने लाइलाज टीबी की एक किस्म पहचानी है। हालांकि इस रिपार्ट में इसे नई बीमारी कहा गया है मगर शोधकर्ता इसे लंबे समय से चली आ रही समस्या का एक और पड़ाव मानते हैं।

भारत ऐसे तीसरे देश के रूप में उभरा है जहां दवाइयों के खिलाफ पूरी तरह प्रतिरोधी बीमारी उभरी है। इस तरह के मामले 2007 में इटली में और 2009 में ईरान में पाए गए थे।

अभी तक, पूर्ण दवा-प्रतिरोधी टीबी के बहुत कम आंकड़े प्राप्त हुए हैं और सरकारी विवरणों में भी इसके प्रकोप की पूरी सूचना उपलब्ध नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोगी संस्थान इटली स्थित टीबी और फेफड़ा रोग केंद्र के डायरेक्टर गियोवानी मिगलिओरी का कहना है कि यह प्रतिरोधी टीबी का सबसे घातक प्रकार है जिसे पिछले दशकों में रिपोर्ट किया गया है। पूर्ण प्रतिरोधी टीबी कोई नई चीज़ नहीं है।

1960 से लेकर अब तक टीबी के उपचार में दो ही मानक दवाइयां रही हैं - आइसोनिएज़िड और रिफेंपिसिन। समय-समय पर प्रतिरोधकता के मामले सामने आते थे लेकिन 1990 के दशक में बहु-औषधि प्रतिरोधकता में वृद्धि होती गई। 2006 में शोधकर्ताओं ने घोर दवा प्रतिरोधी टीबी (XDR-TB) का ज़िक्र किया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन के निगरानी आंकड़ों से पता चला था कि XDR-TB 58 देशों में व्याप्त है और हर साल लगभग 25,000 मामले प्रकाश में आते हैं।

हार्वर्ड मेडिकल स्कूल की रोग प्रसार विज्ञान विशेषज्ञ केरोल मिटनिक भी यह मानती हैं कि TDR-TB नया नहीं है। पहले घोर प्रतिरोधी टीबी की बातें होती थीं मगर किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया था। उनका यह भी कहना है कि सामान्य रूप से भी टीबी को ज़्यादा तवज्जो नहीं दी जाती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दवा प्रतिरोध में पेचीदगी पैदा होने का एक कारण वे मरीज़ हैं जिन्हें एचआईवी संक्रमण के साथ टीबी हुआ है। ये कुल मरीज़ों में से करीब 13 प्रतिशत हैं। वैसे ज़्यादा समस्या तो बीमारी के कुप्रबंधन की वजह से उत्पन्न होती हैं।

हालांकि विश्व स्वास्थ्य संगठन टीबी को 'गरीबों की बीमारी' मानता है मगर दवा-प्रतिरोधकता का विकास घटिया उपचार का परिणाम लगता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की 2011 की रिपोर्ट के अनुसार नए मरीज़ों या पुराने उपचारित पीड़ितों में से मात्र 5 प्रतिशत की जांच ही दवा-प्रतिरोध के लिए की जाती है। अनुमान है कि दवा-प्रतिरोधी टीबी से पीड़ित 16 प्रतिशत मरीज़ों को ही सही उपचार मिल रहा है।

मिगलिओरी का कहना है कि "कुप्रबंधन ही वास्तविकता है।" प्रतिरोधकता मानव निर्मित है और गलत उपचार, गलत उपचार-क्रम और गलत अवधि तक उपचार के कारण पैदा होती है। बहुत से कारकों के मिले-जुले प्रभाव से तय होता है कि बीमारी ठीक हो जाएगी या प्रतिरोधकता पैदा हो जाएगी। मरीज़ दवाइयों का पूरा कोर्स नहीं लेता, या उसे सही दवाइयां नहीं मिलतीं, या प्रतिरोध की समस्या से ग्रस्त मरीज़ को सही उपचार नहीं मिल पाता आदि बातें महत्त्वपूर्ण होती हैं।

2011 सहित स्रोत सजिल्द उपलब्ध है

मूल्य 200 रुपए

समस्या का अगला हिस्सा टीबी की जांच का है। विश्व स्वास्थ्य संगठन खखार की सूक्ष्मदर्शी से जांच को मानक टीबी परीक्षण मानता है, जिसका विकास 100 साल पहले किया गया था। हालांकि यह जांच सस्ती है, लेकिन इससे मिथ्या ऋणात्मक परिणाम प्राप्त होने की संभावना रहती है। इससे यह भी पता नहीं चलता कि रोग किस दवा के प्रति संवेदनशील होगा। और इसके नतीजे आने में ज़्यादा वक्त लगता है जिसके कारण मरीज़ गलत दवा ले लेता है या उससे संक्रमण फैलने का खतरा होता है। अलबत्ता, 2010 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक त्वरित व पूर्णतः स्वचालित नई जांच को मंज़ूरी दी थी जिसे 'एक्सपर्ट' नाम से जाना जाता है। यह जांच रिफेंपिसिन दवा के खिलाफ प्रतिरोधकता का पता भी लगाती है। 'एक्सपर्ट' का उपयोग जुलाई 2011 तक 26 देशों में किया जा रहा था, और 145 देश इस किट को सस्ते दामों में खरीदने के पात्र हैं।

दवा-प्रतिरोध के उभरने में इस तथ्य की भूमिका भी है कि अभी तक टीबी के उपचार के लिए प्रथम लाइन की कोई नई दवा विकसित नहीं हुई है। यदि आप एक ही दवा (रिफेंपिसिन) का इस्तेमाल लंबे समय तक करते हैं तो प्रतिरोधक पैदा होना स्वभाविक है।

संक्रामक रोगों के लिहाज़ से देखें, तो एचआईवी के बाद दुनिया में सबसे ज़्यादा मौतें टीबी से होती हैं। मगर मानव स्वास्थ्य व अर्थ व्यवस्था पर इसके असर के बावजूद यह दवा कंपनियों की प्राथमिकता में नहीं है।

जॉन्स हॉपकिन्स स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ के रिचर्ड चाएसां का मत है कि दशकों से दवा कंपनियां टीबी की दवाइयों में बहुत कम दिलचस्पी लेती आई हैं क्योंकि उन्हें इसमें ज़्यादा मुनाफा नहीं दिखता है। अलबत्ता, अनुसंधान में पब्लिक-प्राइवेट-पार्टनरशिप के तहत पिछले कुछ समय से दवा कंपनियां इसमें दिलचस्पी लेने लगी हैं।

सन 2011 में टीबी के क्लीनिकल ट्रॉयल में 10 नई दवाएं शामिल हुई हैं। ये दवाएं उपचार में लगने वाले समय को कम करती हैं या प्रतिरोधी टीबी के उपचार को संभव बनाती हैं। जैसे बायर के चरण-3 में एक एंटीबायोटिक दवा (मॉक्सीफ्लॉक्सेसिन) है जो उपचार अवधि को कम कर सकती है। ऐसी अन्य दवाइयां भी ट्रायल के विभिन्न चरणों में हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत मई 2012
अंक 280

- **2011 में चिकित्सा के नोबेल पुरस्कार**
- **समलैंगिकता और जीव विज्ञान**

- **पाकिस्तानी छात्रों में विज्ञान का भय**
- **शरीर की निगरानी करते उपकरण**
- **फिर खिला बदबूदार सुंदर फूल**